मनोज
चित्र
कथा
मूल्य
संख्या 51
राम-रहीम
और
"अंतरिक्ष मानव"
डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
राम-रहीम

राम-रहीम और अन्तरिक्ष मानव

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½
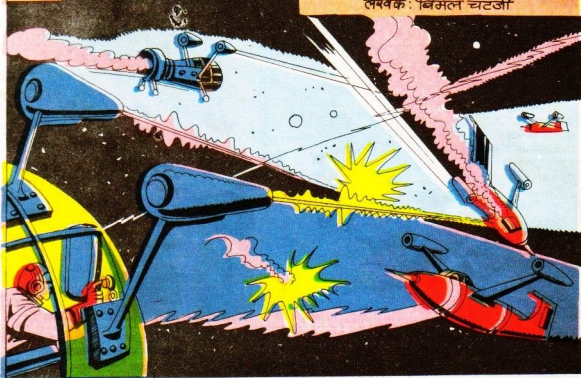
लेखक : बिमल चटर्जी

एक बार ब्रह्माण्ड के अनेक ग्रहों में से दो पड़ोसी ग्रह वारटोम और जैकूला में भयानक युद्ध छिड़ गया। दोनों ही ग्रह विज्ञान में बहुत उन्नत थे, अतः उनके मध्य होने वाला युद्ध भी वैज्ञानिक था।
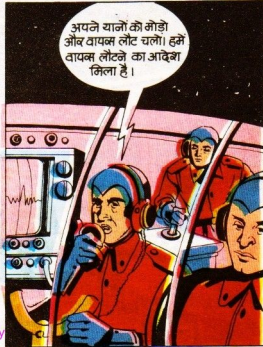
जैकूला ग्रह के सभी यान तबाही से बचने के लिए तेजी से अपनी धरती की ओर लौट चले। दुश्मन वारटोम ग्रह के यानों ने उनका पीछा किया—
मेजर, दुश्मन भाग रहे हैं।
आक्रमण करो, दुश्मन का एक भी यान सही-सलामत उनके देश नहीं पहुंचना चाहिए।
एक विशाल कमरे में जैकूला ग्रह के सम्राट महामहिम मंडोला स्वयं असंख्य स्क्रीनों पर अपनी वायु सेना को हार कर वापस लौटते देख रहे थे।
???
महामहिम, हमारी वायु सेना को फिर शिकस्त का मुंह देखना पड़ रहा है। अब तक हम दुश्मनों के हाथों बहुत नुकसान उठा चुके हैं।
वह जैकूला का अन्तरिक्ष कंट्रोल रूम था।
हम देख और समझ रहे हैं कमांडर जोरो। इस बार-बार की हार से लगता है, हमें दुश्मन के सामने घुटने टेकने ही होंगे।
यह आप क्या कह रहे हैं महामहिम!

मजबूरी है कमांडर, मैं अपनी प्रजा की जान जोखिम में नहीं डाल सकता। फिर काफी दिन से चल रहे इस युद्ध से हमारी फौज का मनोबल भी टूट चुका है और हम उनसे और मुकाबला करने में असमर्थ हैं।
ओह!

तभी एक स्क्रीन के सामने कार्यरत व्यक्ति चीख उठा—
महामहिम, दुश्मनों ने हमारे यानों को अग्नि किरणों के घेरे में ले लिया है। शायद वे सबको तबाह करने की मंशा रखते हैं।
ओह, गॉड!

ऊपर अन्तरिक्ष में—
शाबाश, अब आक्रमण करो, एक-एक को नष्ट कर दो।

जैकूला के यानों में घबराहट फैल गयी।
दुश्मनों ने हमें अग्निकिरणों से घेर लिया है मेजर, यन्त्रों ने काम करना बन्द कर दिया है। हम पूरी तरह उनके जाल में फंस चुके हैं।
ओह, लगता है अब मौत निकट है।

तभी वारटोम के यानों ने जैकूला के यानों पर विनाशक किरणों का प्रयोग किया।
धड़ाम
धड़ाम

अपने तमाम यानों को नष्ट होते देख जैकूला के सम्राट मंडोला का चेहरा उदास हो उठा।
उफ! सारे यान नष्ट कर दिये गये।
मुझे यानों का नहीं अपने बहादुर जवानों का दुःख है कमांडर, जो यानों के साथ ही मौत की नींद सो गये।
एक अन्य कमरे में पहुंच कर—
अब क्या होगा महामहिम! हम बुरी तरह हार चुके हैं।
डर हार का नहीं, डर तो इस बात का है कि अपनी इस जीत पर दुश्मन और अधिक दुस्साहसी हो उठेंगे और तब सम्भव है वे हमारी धरती पर भी आक्रमण कर बैठें।
उफ! तब तो गजब हो जायेगा महामहिम। उन्हें विनाश मचाने से हम किसी भी तरह रोक नहीं पायेंगे।
बस यही चिन्ता मुझे दिन-रात खाये जा रही है कमांडर जोरो। यदि उन्होंने हमारे देश को हड़पने के लिये ऐसे कुविचार पर अमल किया तो फिर क्या होगा? कैसे रोकेंगे उन्हें?
महामहिम! क्यों न हम अपने किसी उन्नत मित्र ग्रह से मदद मांगें।
मित्र ग्रह? ओह...!
मित्र ग्रह की चर्चा होते ही किसी विचार से सम्राट मंडोला का चेहरा चमक उठा।
आपने भी खूब याद दिलाया कमांडर जोरो। एक मित्र ग्रह से वास्तव में हम सहायता की आशा कर सकते हैं।
वह कौन-सा ग्रह है महामहिम?

दूसरे दिन एक तीव्रगति वाला आधुनिक उपकरणों से लैस यान जैकूला ग्रह से उड़ा।

जब वह आकाश गंगा की गहराई में पहुंचा, वारटोम के निरीक्षक यानों की दृष्टि उस पर पड़ी।
वह जैकूला ग्रह का यान मालूम देता है।
हां-किसी दूसरे ग्रह को जा रहा लगता है।

तब जनरल मोन्टो से आदेश प्राप्त करो कि उसके साथ क्या किया जाये-?
ओ.के.!

हैलो-हैलो कैप्टन हिन्क स्पीकिंग-हैलो!

शीघ्र ही वारटोम ग्रह के अन्तरिक्ष कंट्रोलरूम से उसका सम्पर्क जुड़ गया।
यस, क्या रिपोर्ट है कैप्टन हिन्क!
सर, जैकूला का एक यान इस समय हमारी नजर में है।

ओह, उसकी गति-विधि!
वह अन्तरिक्ष सीमा से बाहर जा रहा है। शायद किसी अन्य ग्रह की ओर।

जरूर वह किसी अन्य ग्रह से मदद मांगने जा रहा होगा। नष्ट कर दो उसे।
यस सर!
आक्रमण करो और नष्ट कर दो।
ओ.के.!
फिर वारटोम का लड़ाकू यान जैकुला के यान की ओर तेजी से बढ़ा।
कमांडर, वारटोम का यान हमारा पीछा कर रहा है। शायद मार गिराने की चेष्टा में है।
गति तेज करो और सुरक्षा किरणें बिछा दो...
...हमें उनसे उलझना नहीं है, बल्कि गति से उन्हें हराकर निकल भागना है।
यस सर!
जब वारटोम के यान चालक ने जैकुला के यान की गति बढ़ती देखी_
ओह! उन्होंने गति बढ़ा दी। बिना उलझे भागना चाहते हैं।
तुम भी गति बढ़ाओ और दूर मारक किरणें दागो।
वारटोम यान ने गति बढ़ाने के साथ-साथ दूरमारक किरणों से जैकुला यान पर आक्रमण किया।
श्.श्..श्...श्...
परन्तु जैकुला यान सुरक्षा किरणों के घेरे में होने के कारण नष्ट नहीं हुआ।

सर, उन्होंने सुरक्षा किरणों का प्रयोग किया हुआ है। हमारा आक्रमण सफल नहीं हो रहा।
ओह! फिर तो उसे नष्ट नहीं किया जा सकेगा, लेकिन फिर भी कोशिश जारी रखो।
वारटोम के लड़ाकू यान ने कई बार जैकूला के यान पर आक्रमण किया, लेकिन उसे नष्ट करने में असफल रहा — और जैकूला यान अंतरिक्ष सीमा से बाहर निकल गया।
देवता का शुक्र है, हम सुरक्षित बाह्य आकाश-गंगा में पहुंच गये। अब उनके आक्रमण का कोई खतरा नहीं।
काफी समय बाद—
कमांडर! वह देखिये, वह चमकता गोला ही पृथ्वी है।
कितना सुन्दर है!
इधर पृथ्वी पर—
आजकल क्या कर रहे हो?
एक रात राम-रहीम चीफ मुखर्जी द्वारा दी गई दावत में मौजूद थे
स्कूल की छुट्टियां चल रही हैं चीफ!
केस भी कोई नहीं, अत: मक्खियां मार कर तीस मार खां बन रहे हैं।
हुम्म!
वैसे चीफ अंकल, हम यह सोच रहे हैं कि कुछ दिनों के लिये किसी हिल स्टेशन पर घूम आएं।
विचार बुरा नहीं, लेकिन जाने से पहले खबर जरूर करते जाना।

पार्टी खत्म होने पर राम-रहीम ने चीफ से विदा ली।
रात काफी हो चुकी है, अतः सम्भल-कर जाना।
चिन्ता न करें चीफ अंकल! गुड नाईट।
राम ने मोटर साइकिल पूरी गति के साथ अपने घर की ओर दौड़ा दी।
जब वे पहाड़ी मार्ग से होकर गुजर रहे थे तो सहसा जैसे बिजली-सी चमकी।
???
अरे, यह चमक कैसी?
लेकिन वह चमक केवल पलभर के लिए हुई थी। दूसरे पल चारों ओर पहले जैसा ही अंधकार फैल गया।
आकाश तो साफ है-फिर यह बिजली की चमक कैसी थी?
समझ में तो मेरी भी नहीं आया?
तभी रहीम, जो गौर से आकाश की ओर देख रहा था, अचानक आश्चर्य से चीख उठा।
राम भइया, गाड़ी रोको।
क्यों, क्या हुआ?
राम ने चौंककर तुरन्त गाड़ी रोक दी।
वह देखो-!
अरे-!

आकाश में कोई चमकदार वस्तु दिखाई दे रही थी।
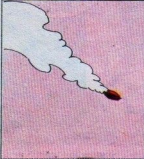
उस चमकदार वस्तु के निकट आने पर

वास्तव में वह यान जैकूला ग्रह का था। जब वह काफी नीचे उतर आया_
वह यान ही है। जरूर किसी अन्य ग्रह से आया है।
बहुत सुना था, लेकिन देखने को पहली बार मिल रहा है।

बुजदिल होगे तुम, मैं तो तुम्हें सावधान कर रहा था। लो, मैं आगे-आगे चलता हूं।
जल्दी ही जोश में आ गया, वरना सिर खाता।

कुछ देर बाद दोनों पहाड़ी के दूसरी ओर पहुंचे।

यहां तो कोई भी नहीं!

लेकिन वह यान उतरा यहीं कहीं है। चलो, उस तरफ देखते हैं।

उधर कुछ ऊंचे पहाड़ों के मध्य जैकूला ग्रह का यान सकुशल उतर चुका था।
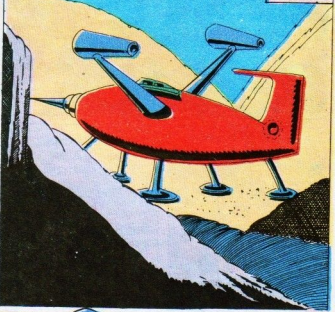
फिर वे पहाड़ियों पर इधर-उधर घूमने लगे।
जनाब,यह जगह तो बिल्कुल उजाड़ व वीरान लगती है।
हां-लेकिन हमारे लिये सुरक्षित है।

जब वे एक पहाड़ी के ऊपर से होकर गुजर रहे थे—
सर,नीचे देखिए, कोई चमकदार वस्तु हिल-डुल रही है।
ओह!

आओ नीचे चलकर देखते हैं, लेकिन सतर्क रहना। टार्चें बुझा दो।
यस सर!

वह चमकदार वस्तु और कुछ नहीं, राम के हाथ में थमी जली हुई टार्च थी। अंधकार होने की वजह से वे जैकूला के वासियों को दिखाई नहीं दिये थे।

लेकिन वे दोनों आने वाले खतरे से बेखबर आगे बढ़ते चले जा रहे थे।
पूरी पहाड़ी तो छान डाली, लेकिन वह विचित्र यान कहीं नहीं मिला। अब क्या पूरी रात यहीं काट देने का इरादा है। चलो, लौट चलें।

बस, उस सामने वाली पहाड़ी के दूसरी ओर और देख लें।
अब बाकी की खोज-बीन सुबह कर लेना यार, इस पहाड़ी माटी पर चलते-चलते तो मेरी टांगें ही टूट गई हैं।

राम-रहीम को इस बात का तनिक भी आभास नहीं था कि जिनकी तलाश में वे घूम रहे हैं, वे उनके बिल्कुल निकट पहुंच चुके हैं।
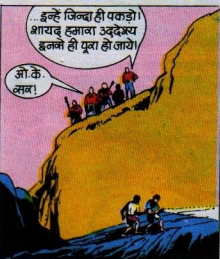
चेतावनी सुन राम-रहीम तेजी से पलटे, फिर अजीब-सी वेश-भूषा में पांच व्यक्तियों को सामने देख मन-ही-मन चौंक उठे।
अंतरिक्ष मानव ही लगते हैं!
मारे गये, आखिर वही हुआ, जिसका डर था। आखिर फंस ही गये खतरे में।
कुछ देर तक उन्हें ठगे से खड़े-खड़े देखते रहने के पश्चात् वे दोनों सम्भले।
कौन हैं आप लोग?
और क्या चाहते हैं?
हम दूसरे ग्रह के वासी हैं...
...हमारे देश का नाम जैकूला है, और तुम लोग?
हम पृथ्वीवासी हैं।
यह तो हम भी जानते हैं कि यह पृथ्वी ग्रह है, लेकिन इस देश का और तुम्हारा नाम क्या है? क्योंकि हमने सुना है यहां बहुत से देश हैं।
आपने ठीक ही सुना है। मेरा नाम राम है।
और मेरा रहीम!
यह भारत देश है, और हम दोनों भारतवासी ही हैं।
भारत!
भारत!
भारत का नाम सुनकर उन सभी के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।
क्या तुम हमें बता सकोगे कि प्रोफेसर भास्कर हमें कहां मिलेंगे?
प्रोफेसर भास्कर!
???
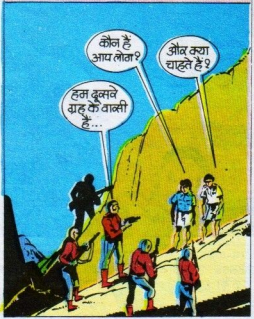
प्रोफेसर भास्कर का नाम उनके मुख से सुनकर राम-रहीम चौंक उठे। वे प्रोफेसर भास्कर से अच्छी तरह परिचित थे, क्योंकि प्रोफेसर भास्कर देश के एक महान् वैज्ञानिक थे।

लेकिन मजबूरी थी। राम-रहीम को उनका कहा मानना पड़ा।
जरूर ये लोग हमारा भुर्ता बनाकर डिनर में प्रयोग करेंगे–आह–!
पता नहीं प्रोफेसर की तलाश इन्हें क्यों है–मालूम करना ही पड़ेगा।

मार्ग वही था, जहां से राम, रहीम के साथ पहाड़ी के दूसरी ओर जाने का इरादा रखता था। फिर जब वे उस पहाड़ी के दूसरी ओर पहुंचे–
???
ओह, काफी बड़ा और लड़ाकू यान प्रतीत होता है!

इधर यान के भीतर एक विशेष कक्ष में।
कमांडर, कर्नल टोयो व सैनिक वापस लौट आये हैं, लेकिन उनके साथ पृथ्वी के दो लड़के भी हैं। क्या द्वार खोल दिया जाए?
ओह! शायद कर्नल टोयो कुछ सोचकर ही उन्हें लाया होगा। द्वार खोल दो, परन्तु सभी को सावधान कर दो। हम किसी किस्म का खतरा मोल नहीं लेंगे।
यस सर!

इधर राम-रहीम जैसे ही उन पांचों के साथ यान के निकट पहुंचे, यान का द्वार खुल गया और एक सीढ़ी बाहर निकल आई।
द्वार खोल दिया गया है, लेकिन उन्हें हमारे आने का कैसे पता चला?
जरूर भीतर मौजूद लोग हमें देख रहे हैं!
तुम वास्तव में समझदार हो...

...भीतर स्क्रीन पर हमारी एक-एक हरकत को देखा जा रहा है। चलो, अब भीतर चलो।
हुम्म!
ओह!

इस लिए कि कहीं आप लोग उन्हें नुकसान पहुंचाने की कोशिश करें!
और यह भी हो सकता है कि आप उनका अपहरण करने की कोशिश करें।

ऐसी कोई बात नहीं है बच्चो, दरअसल हम उनके पास मदद के लिये आये हैं।
कैसी मदद–? सब कुछ साफ-साफ कहिए। विश्वास होने पर हो सकता है, हम आपको उनके बारे में बता दें।

कुछ देर सोचने के पश्चात् कमाण्डर जोरो ने राम-रहीम को सारी कहानी सुना दी।

लेकिन इसका क्या प्रमाण कि आपने जो कुछ कहा है, वह सच ही है।
तुम बहुत शक्की हो, खैर!

फिर जोरो ने अपने सम्राट द्वारा दी गई अंगूठी निकाल कर उन्हें दिखाते हुए कहा—
प्रमाण के लिये हमारे पास सम्राट की यह अंगूठी है — जिसे प्रोफेसर भास्कर पहचान लेंगे, क्योंकि वे हमारे सम्राट से अच्छी तरह परिचित हैं।

अब इनकी बात पर विश्वास करना ही होगा!
???

सोचने-विचारने के पश्चात् राम बोला—
ठीक है, प्रोफेसर भास्कर को कल आपसे मिला दिया जाएगा। यह अंगूठी आप हमें दीजिए।
नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। यदि तुमने हमसे धोखा किया तो...

...तुम हमें केवल उनका पता बता दो। हम स्वयं उनसे कान्टेक्ट कर लेंगे।
धोखा आप भी तो दे सकते हैं। वैसे विश्वास रखिए, यदि प्रोफेसर भास्कर ने अंगूठी को पहचान लिया तो कल वे आपके सामने होंगे...

...वरना आपकी अंगूठी आपको वापस लौटा दी जाएगी– अगर आपको मुझ पर विश्वास नहीं है तो मेरा साथी मेरे लौटने तक आपके पास अमानत के तौर पर रहेगा।
हमें मंजूर है!

राम का निर्णय सुन रहीम सकपका गया।
लेकिन राम भइया!
चिन्ता मत करो रहीम। ये तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा-येंगे।
रहीम खामोश हो गया।

कमाण्डर जोरो ने अंगूठी राम को देते हुए कहा–
यह लो अंगूठी, लेकिन एक बात ध्यान रखना। हम ज्यादा लोगों की निगाहों में नहीं आना चाहते। अत: हम लोगों के यहां आने की बात फैलने न पाये।
आखिर बलि का बकरा मुझे ही बनाया गया!

मेरी ओर से तो वादा रहा कमांडर, लेकिन यदि आपके यान को हमारे अंतरिक्ष अनुसंधान केन्द्र ने देख लिया होगा तो फिर आपके यान की खोजबीन शुरू हो चुकी होगी।
ओह! खैर देखा जायेगा।
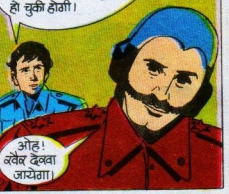
फिर राम को यान से बाहर कर दिया गया।
सुनो लड़के, कल तक लौट जरूर आना, वरना तुम्हारे साथी की जान खतरे में पड़ जायेगी।
निश्चिंत रहिये।
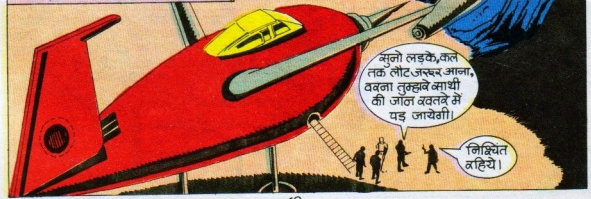
पहाड़ों के मध्य से निकलकर राम सड़क के किनारे खड़ी अपनी मोटर साइकिल के निकट पहुंचा।

गनीमत है मोटर साइकिल सही-सलामत खड़ी है, वरना घर पहुंचना ही कठिन हो जाता।

फिर उसे स्टार्ट कर वह घर की ओर चल पड़ा।

लेकिन मम्मी-डैडी को रहीम के बारे में क्या कहूंगा? आज भी कोई-न-कोई बहाना बनाना ही पड़ेगा!

काफी रात गये राम घर पहुंचा। द्वार पर ही उसका सामना अपने मम्मी डैडी से हो गया।

इतनी रात कर दी, कहां रह गये थे? चिन्ता के मारे हमारी तो जान सूखी जा रही थी।

अरे, रहीम कहां है?

मम्मी, मोटर साइकिल के मार्ग में खराब होने के कारण देरी हो गई और रहीम मुखर्जी अंकल के यहां ही रह गया है। कल सुबह तक आ जायेगा।

मि. मुखर्जी से राम के माता-पिता परिचित अवश्य थे, लेकिन यह नहीं जानते थे कि वे बाल सीक्रेट सर्विस के चीफ हैं और राम-रहीम उनके एजेन्ट।

राम के उत्तर से कर्नल राघव और राधादेवी संतुष्ट हो गये, फिर उनसे विदा ले राम सीधा अपने कमरे में पहुंचा और—

अभी उन्हें फोन कर दूं। सुबह जाकर मिल लूंगा।
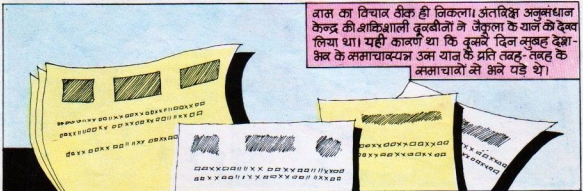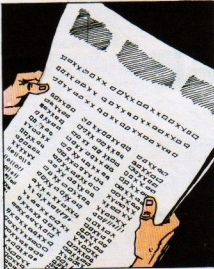
राम के हाथ में जब समाचार पत्र आया-
ये खबरें कहीं मार्ग में कठिनाइयां पैदा न कर दें, यदि यान को खोज लिया गया तो मुश्किल हो जायेगी!
राम तुरन्त बाहर जाने के लिए तैयार होने लगा।
इससे पहले कि यान को खोज लिया जाए, मुझे जल्द-से-जल्द प्रोफेसर से मिल लेना चाहिये। वे मेरा इंतजार कर रहे होंगे!
लेकिन तैयार होकर जैसे ही वह अपनी मोटर साइकिल के निकट पहुंचा-
अरे, इतनी सुबह-सुबह कहां चल दिये?
मम्मी, मुझे किसी से इसी समय मिलना है। खाने पर इंतजार मत करना।
इधर शहर की दक्षिणी पहाड़ियों के इर्दगिर्द पुलिस और सेना के जवान पूरी तरह घेरा डाल चुके थे।
वह विचित्र यान इन्हीं पहाड़ियों में उतरता देखा गया था। चप्पा-चप्पा छान मारो।
यस सर!
ये पहाड़ियां वही थीं, जहां जैकूला का यान उतरा था।
किसी भी खतरे से निपटने के लिए फौज हर प्रकार के शस्त्रों से लैस थी।
किसी भी किस्म के खतरे से निपटने के लिए तैयार रहना। हो सकता है घिरे जाने पर वह हम पर आक्रमण करने की कोशिश करे।
ओ.के. सर!
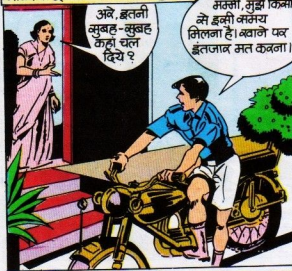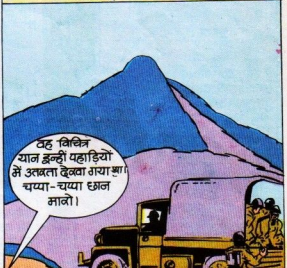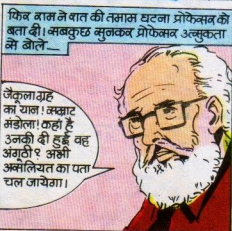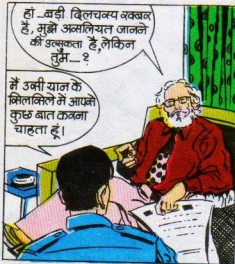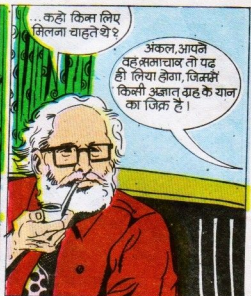
उधर राम, प्रोफेसर भास्कर की कोठी में पहुंचा।
नमस्ते प्रोफेसर अंकल!
नमस्ते बेटा, आओ बैठो। मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था...
...कहो किस लिए मिलना चाहते थे?
अंकल, आपने वह समाचार तो पढ़ ही लिया होगा, जिसमें किसी अज्ञात ग्रह के यान का जिक्र है।

फिर प्रोफेसर ने नग वाले हिस्से के नीचे, जहां बारीक तारों और यंत्रों का जाल-सा फैला था, कुछ किया-तुरन्त ही उसमें से एक साफ-सुथरी आवाज निकलने लगी, मानो रेडियो चला दिया गया हो।
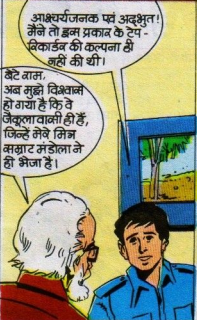
प्रोफेसर भास्कर को मित्र मंडोला का नमस्कार! मित्र, मुझे तुम्हारी सहायता की सख्त आवश्यकता है। हो सके तो तुरन्त मेरे आदमियों के साथ चले आओ-तुम्हारी दोस्ती पर हमेशा मुझे नाज रहेगा।

उस यात्रा के दौरान कई बार उसने मेरी मदद भी की थी। आज उसे मेरी मदद की आवश्यकता है। अतः मैं वहां अवश्य जाऊंगा।

तब अंकल, देर न कीजिए, तुरन्त मेरे साथ चलिए...

...कहीं किसी गलत-फहमी में हमारी फौज उनसे भिड़ न जाये।

हां-चलो।

तुरन्त ही दोनों एक कार में बैठकर शहर की दक्षिणी पहाड़ियों की ओर चल पड़े।

प्रोफेसर अंकल, मेरा आपसे एक निवेदन है।

हां-हां कहो-।

इस अंतरिक्ष यात्रा में आप रहीम और मुझे भी अपने साथ रखें तो मुझे अति प्रसन्नता होगी। काफी समय से ब्रह्मांड के अन्य ग्रहों को देखने की हमारी भी बहुत इच्छा है।

नहीं-यह सम्भव नहीं।
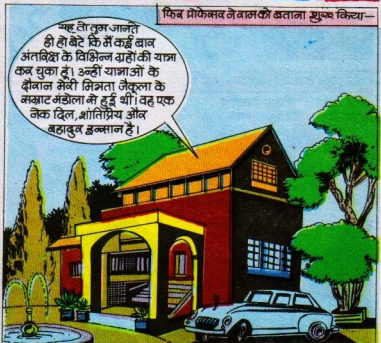
नीचे उतरकर जैकूला के यान के चारों ओर घेरा डालने के पश्चात्–
तुम जाकर फौरन इस आप्रेशन के इंचार्ज कर्नल श्याम को खबर करो, ताकि लड़ाकू टुकड़ी यहां जल्द-से-जल्द आ पहुंचे।
यस सर!
खबर लगने पर पूरी सेना टैंक व तोपों के साथ वहां आ पहुंची। लड़ाकू विमान भी जैकूला यान के ऊपर मंडराने लगे। किसी भी खतरे से निपटने के लिए अब वे पूरी तरह तैयार थे।
सारी तैयारी करने के पश्चात् सेना टुकड़ी के आप्रेशन इंचार्ज कर्नल श्याम ने लाउडस्पीकर पर यान के भीतर मौजूद लोगों को चेतावनी देनी आरम्भ की–
सुनो अज्ञात लोगो, मैं तुम लोगों से ही सम्बोधित हूं– यदि तुम हमारी भाषा सुन और समझ रहे हो तो दस मिनट के भीतर यान से बाहर निकल आओ– वरना तुम्हारा यान नष्ट कर दिया जायेगा।
यान के भीतर स्क्रीनों पर सबकुछ देखा और सुना जा रहा था।
ये तो आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं कमांडर! क्या किया जाये?
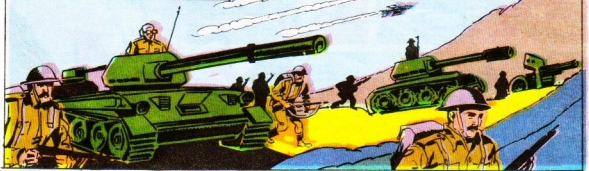
मिन्टो, माइक्रोफोन मुझे दो और बाहरी स्पीकर ऑन करो।
यस सर, लीजिए।
कमाण्डर जोरो ने माइक्रोफोन संभाल कर बोलना आरम्भ किया —
हम आपकी भाषा समझ रहे हैं मित्र! विश्वास रखिए, हम आपके दुश्मन नहीं...
...और न ही हम आपके देश को कोई नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से यहां आये हैं। हमें एक जरूरी काम से यहां आना पड़ा। कार्य के पूरा होते ही हम शान्ति-पूर्वक वापस अपने ग्रह को लौट जायेंगे।
उत्तर में आप्रेशन इंचार्ज कर्नल श्याम ने कहा —
आप लोग किस ग्रह से सम्बंध रखते हैं और यहां आने का क्या उद्देश्य है?
हम जैकूला ग्रह से आये हैं, लेकिन काम फिल-हाल नहीं बता सकते...
...वैसे हमें किसी का इंतजार है।
तुम्हें जो कुछ कहना है, यान से बाहर आकर कहो।
कमांडर जोरो आदि बाहर निकलने की बात सुनकर उलझन में पड़ गये।
यह तो मुश्किल हो गयी। बाहर निकलने में तो खतरा है। पता नहीं वह छोकरा कहां रह गया?
जनाब, क्यों न हम उसके साथी रहीम द्वारा इन्हें समझाने का यत्न करें!

नहीं, ऐसा करने में खतरा और बढ़ सकता है। कहीं उन्होंने यह समझ लिया कि हम उसे जबरदस्ती रोके

लेकिन बाहर न निकलने या उचित विश्वास न दिलाने पर वे हमारे यान पर आक्रमण कर सकते

मजबूरी है, हमें तब भी शांत

तुरन्त टैंकों और तोपों ने यान पर आक्रमण कर दिया।
धड़ाम
परन्तु जब यान को उन्होंने जरा भी क्षति पहुंचते नहीं देखी –
सर, उस पर तो हमारी गोलाबारी का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ रहा!
लड़ाकू विमानों से सम्पर्क कर बमबारी करने का निर्देश दो।
यस सर!
आदेश मिलते ही आकाश से लड़ाकू विमानों ने बम बरसाने आरम्भ किये। यान के चारों ओर घेरा डाले सैनिक अब यान के निकट से हट चुके थे।
परन्तु उस भीषण बमबारी का भी जेकुला के यान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
उफ, उस पर तो कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा।
समझ में नहीं आता कि वह किस फौलाद का बना हुआ है।
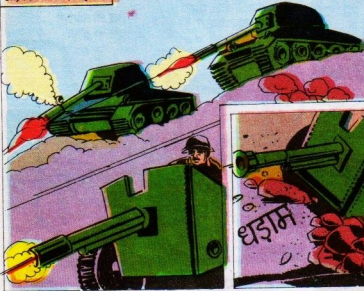
अपने सभी आक्रमणों को विफल जाते देख सभी किंकर्तव्य-विमूढ़ से हो कर रह गये।
???
???
जबकि यान के भीतर –
बेचारे अपने आक्रमण को विफल जाते देख आश्चर्य चकित हैं!
बस, उन्हें रोके रखने का यही एक मात्र उपाय था।
जब राम और प्रोफेसर भास्कर उन पहाड़ियों के निकट पहुंचे।
उफ! आखिर वही हुआ, जिसका मुझे डर था।
धमाके और विस्फोट बता रहे हैं कि यान पर आक्रमण किया जा रहा है।
जल्दी आइये अंकल, कहीं वे यान को तबाह ही न कर दें।
लेकिन जैसे ही वे आगे बढ़े –
ऐ-ऐ-कहां जा रहे हो, ठहरो।

फिर इससे पहले कि वे सैनिक सम्भलकर उठ खड़े होते, राम प्रोफेसर का हाथ थाम, आगे भाग लिया।

यह तुमने अच्छा नहीं किया राम!

मजबूरी थी अंकल, जल्दी चलिये। हमें हर कीमत पर इस आक्रमण को रोकना है।

- क्या राम और प्रोफेसर भास्कर यान तक पहुंच पाने में सफल हुए?
- क्या उनके पहुंचने तक अंतरिक्ष मानव अपने यान को सुरक्षित रखने में सफल हो सके?
- रहीम का क्या हुआ?
- क्या राम रहीम और प्रोफेसर भास्कर अपने अनजाने मित्रों के साथ जेकूला ग्रह पहुंच सके?
- इन सब सवालों का उत्तर जानने के लिए पढ़ें:– **मौत की टक्कर !**